सीरत ए तैय्यबा और आज का वी.आई.पी कल्चर

رَبِّ اشْرَحْ لِیْ صَدْرِیْ وَ یَسِّرْ لِیْ اَمْرِیْ وَ احْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِیْ یَفْقَهُوْا قَوْلِیْ

أعوذ بالله من الشيطان الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم

" لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ"

सूरह अहज़ाब-आयत नम्बर 21

स-द-क़ल्लाहुल अज़ीम व स-द-क़ा रसूलुहुन-नबीयुल करीमुल मतीन्०

اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓئِكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا

अस्सलातो वस्सलामो अलैक़ा या रसूलल्लाह० अस्सलातो वस्सलामो अलैक़ा या नबी अल्लाह (सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम)०.

अल्लाह तबारक व तआला की हम्दो सना और हुज़ूर सय्यदे आलम, ज़ीनते बज़्मे क़ायनात, दस्तगीर-ए-जहां ,ग़मग़ुसारे ज़मा, सय्यदे सरवरा, हामिए बे-कसां, क़ाईदुल मुरसलीन, अहमदे मुजतबा जनाबे मुहम्मदे मुस्तफा (सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम) के दरबारे ग़ौहरबार में हदिया-ए-दुरूदो सलाम अर्ज़ करने के बाद । निहायत ही मोअज़्ज़िज़ व मोहतरम सामईन हज़रात ! रब्बे ज़ुलजलाल के फज़्ल और तौफीक़ से सय्यद ए आलम नूर ए मुजस्सम शफी-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस्वा-ए-ह-स-ना की रोशनी आज भी हमारे पास मौजूद है। जिसके जरिए से हम अपने माहौल से हर आलूदगी ,हर कजी को, हर बदी को दूर कर सकते हैं और उम्मते मुस्लिमा में वीआईपी कल्चर के नाम पर जो खुराफात आ चुकी है, नाम निहाद रोशन खयाली के धुंए से जो फिज़ाएं आलूदह हो चुकी है इन सब का मुकाबला सय्यद ए आलम, नूर ए मुजस्सम, शफी-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम के तरीके और आपकी दी हुई शरीयत से ही किया जा सकता है। क़ुरआने मजीद बुरहाने रशीद में सूरह अहज़ाब की आयत नम्बर 21 में रब्बे ज़ुलजलाल ने ये इर्शाद फरमाया है

"لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ "

तर्जुमा :- " तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिंदगी में,हयात-ए-तय्यबा में, आप की सिफात-ओ-किरदार में बेहतरीन नमूना मौजूद है।

لِّمَنْ كَانَ یَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْیَوْمَ الْاٰخِرَ وَ ذَكَرَ اللّٰهَ كَثِیْرًا ؕ

किस के लिए यह नमूना है ? से मुलाकात की उम्मीद रखता हो और आखिरत पर यकीन रखता है। और रब्बे ज़ुलजलाल का बहुत ज्यादा जिक्र करने वाला है। खालिक़-ए-कायनात जल्ला जलालुहू को यह अज़ल से पता था की इंसानियत की रहनुमाई का आखिरी पैगाम कुरान ए मजीद बुरहान ए रशीद की शक्ल में लोगों को दिया जाएगा। और उसे अज़ल से पता था कि इंसानियत की रहनुमाई का सिलसिला इंसानियत की रहनुमाई के लिए नबुव्वत का जो सिलसिला शुरू होगा उसका इख़्तिताम सय्यद उल मुरसलीन हजरत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम की जाते गिरामी पर कर दिया जाएगा ।इस बुनियाद पर' वह" के बंद हो जाने के बाद अल्लाह रजा के कामों को हमेशगी देने के लिए जिस शख्सियत के किरदार को कयामत तक के अंधेरों को मिटाने के लिए अल्लाह ने चुना, वह किरदार और वह सीरत सय्यद उल मुरसलीन हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम की है कि जमाते साहब आपकी सीरत को सामने रखकर अपने अतवारऔर किरदार को तामीर करेगी और उन सहाबा के किरदार को देखकर " ताबईन" अपने किरदार को तामीर करेंगे। रब्बे ज़ुलजलाल को यह पता था कि अगरचे

"वही" का दरवाजा बंद हो चुका होगा लेकिन आखिरी दीन सय्यद ए आलम सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम की " जामेअ शख्सिय" के फैज़ की वजह से जो सीनों से सीनों की तरफ मुन्तकिल होता चला जाएगा और जो नस्ल दर नस्ल जिंदा किरदार की शक्ल में सदियों की तारीख में आगे पहुंचता चला जाएगा, वह किरदार हमेशा के लिए सोसाइटी के अंदर रब्बे ज़ुलजलाल की रजा के उसूलों को रोशन करता रहेगा, इस बुनियाद पर सय्यद ए आलम नूर ए मुजस्सम शफीअ-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम का उस्वा-ए- ह-स-ना , उसका इतना जानदार किरदार है कि आज के माहौल तक उस उस्वा-ए-ह-स-ना के जिंदा असरात हम सबको नजर आते हैं। और उस उस्वा ए ह-स-ना का फैज़ आजतक की नस्लों के अंदर मौजूद है। अगरचे 15वीं सदी वालों की मुलाकात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम से नहीं हुई, ना सरकार को देखकर जिंदगी के अतवार उन लोगों ने समझे और ना ही नबी ए अकरम सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम के पास बैठकर रुम्मुज़-ए-दीन को इन लोगों ने हासिल किया मगर यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम के उस्वा ए ह-स-ना की अट्रैक्शन है इश्क और शोक के साथ इन्हें नस्लें कबूल करती रही जिसके नतीजा में आज भी सोसाइटी के अंदर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम का उस्वा ए ह-स-ना एक जिंदा हकीकत की शक्ल में मौजूद है। इससे यह समझना कोई दूर की बात नहीं है कि खत्म-ए-नबुव्वत का फेज़ नबी ए अकरम सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम के उस्वा ए ह-स-ना की शक्ल में जो बदस्तूर आगे पहुंचा है, कयामत तक के लिए इस फेज़ को मजीद आगे आम करने के लिए हम सब पर लाजिम है हम उस्वा ए ह-स-ना को मजीद समझें, इसके मुबल्लिग़ बने और अमलन इसके मुताबिक जिंदगी बसर करें, ताकि हम खामोश हो तब भी हमारा तरीका तबलीग कर रहा हो कि नबी-ए-आख़िरुज़्ज़मां जो शरीअत दे कर गए हैं , वो शरीअत ना जामिद है ना जाम है बल्कि फंक्शनल है और हर ज़माने की ज़रूरत को पूरा करती है और आज भी उसकी रोशनी हमारे पास मौजूद है।इस सिलसिले में कुरान ए मजीद बुरहान ए रशीद कि यह आयते करीमा जिसमें अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया "

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ "

यकीनन तुम्हारे लिए "तुम्हारे लिए" से मुराद सिर्फ वह जो सहाबा इकराम अलैहेमुर्रिदवान उस वक्त सामने मौजूद थे वह नहीं है बल्कि कयामत तक का फर्द इसका मुखातिब है। कयामत तक का हर फर्द इस से रोशनी हासिल करता है।

"لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ " ◀

तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम की जिंदगी के अंदर बेहतरीन नमूना मौजूद है।
जिसने दौरे साहबा में कुरान पढ़ा " लकुम" ने उसे भी मुतवज्जे किया और जिसने अहद-ए-ताबईन में कुरान पढ़ा "लकुम" ने उसे भी मुतवज्जे किया और जिसने कुरूने ऊला के बाद कुरान पढ़ा "लकद काना लकुम" कि तुम्हारे लिए, इस "लाकुम" ने उन्हें भी मुतवज्जे किया और चलते चलते आज 15 वीं सदी का मुसलमान जब कुरान पड़ता है तो " लकद काना लकुम" ये अल्फाज उसे भी मुतवज्जे करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम का उस्वा-ए-ह-स-ना सिर्फ पहली सदी के लिए नहीं था यह 15वीं सदी के मुसलमानों की प्यास भी बुझा रहा है और यहां ही नहीं बाद कि सदियों में भी जो पैदा होंगे "लकद काना लकुम " के अल्फाज उन्हें भी मुतवज्जे करेंगे और सय्यद ए आलम नूर ए मुजस्सम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उस्वा-ए-ह-स-ना उनके लिए भी मीनारा-ए-नूर का काम करता रहेगा। इससे यह बात सूरज की तरह जाहिर है कि जिस तरह कुरान ए मजीद की तालीमात हर जमाने के लिए है , सिर्फ कुरुने ऊला की जरूरत है पूरी नहीं कर रही थी, आज के दुखों का इलाज भी कुरान ए मजीद में मौजूद है, तो ऐसे ही सिर्फ कुरुनी ऊला के इंसान के लिए उस्वा-ए-ह-स-ना के अंदर ज़खीरा मौजूद नहीं था बल्कि जिस तरह उस वक्त का इंसान उस्वा-ए-ह-स-ना से मुतास्सिर होता था और उस वक्त के इंसान को उस्वा-ए-ह-स-ना से रहनुमाई मिलती थी वक्त इंसान को कारे ज़िल्लत से सुरैया की रिफअतों

तक पहुंचाने का किरदार उस्वा-ए-ह-स-ना अदा कर रहा था , आज ही जिल्लत में गिरे हुए इंसान को सुरैया की रिफअत तक पहुंचाने की पावर उस्वा-ए-ह-स-ना में मौजूद है।

इससे आप यह अंदाजा लगाएं कि रब्बे ज़ुलजलाल ने सय्यद उल मुरसलीन हजरत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम को कितनी जामेअ सीरत अता फरमाई और आपके किरदार में वुसअत कितनी है और आपके अखलाक आली कितने हैं और आपके फजाईल, हर सोच की परिवार से बुलंद कितने हैं कि सिर्फ उस वक्त का इंसान ही आप की सीरत के कानून और अखलाक के उसूलों को देखकर मुतास्सिर नहीं हो रहा था, आज का इंसान भी इतनी सदियों के गुज़र जाने के बावजूद जिस वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम के उस्वा-ए-ह-स-ना को देखता है, अगर हठधर्म ना हो जिद्दी ना हो मरीज ना हो तो वह भी समझेगा की यकीनन अगर जर्रे को आफताब बनाया जा सकता है और कांटो को गुलाब बनाया जा सकता है तो वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम की रोशन सीरत को सामने रखने से, इतना बड़ा इंकलाब लाया जा सकता है, इससे यह बात बिल्कुल रोशन हुई की जिस किरदार को रब्बे ज़ुलजलाल सारी इंसानियत के सामने बतौर ए चैलेंज पेश कर रहा है जी जितने भी सदाकत वसूल करनी हो सुजाअत लेनी हो फरासत लेनी हो खुशबू हासिल करना हो, वह किसी और किरदार की तरफ मत देखे, वह मेरे नबी अलैहिस्सलाम के किरदार की तरफ देखें। तो रब्बे ज़ुलजलाल ने फिर इस किरदार को कितना उम्दा बनाया, कितना जामेअ बनाया, तंक़ीद से कितना बुलंद बनाया और ऐबों से कितना पाक पैदा किया और इसके अंदर जामियत कितनी रखी और हर अहद के मुसलमानों पर यह लाजिम कितना करार दिया कि तुमको इस उस्वा-ए-ह-स-ना की अजमत ए बयान करना है, इसकी हकीकतों को जाहिर करना है और गैर मुस्लिमों के सामने इस उस्वा-ए-ह-स-ना के फज़ाइल रोशन करने हैं ताकि जो कलिमा-ए-इस्लाम पढ़ने वाले हैं वह तो सबक हासिल करेंगे ही, साथ ही जो अभी इस्लाम के बाहर हूं उन पर भी इस उस्वा-ए-ह-स-ना के असरात मुरत्तब हों , तो वो कलमा पढ़ते हुए सय्यद ए आलम नूर ए मुजस्सम शफी-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम के उस्वा-ए-ह-स-ना से उजाला हासिल करना शुरू कर दें। इस दुनिया पर जो शरीयते मोतह्हरा मैं मुक़ाम-ए-नबुव्वत का बयान और मनसब-ए- रिसालत की जो अजमत है , वह एक ऐसा टॉपिक है कि जो उस्वा-ए-ह-स-ना की तबलीग और उस्वा-ए-ह-स-ना पर अमल की तहरीक का पहला सबक है, जिस शख्स के किरदार की अजमत और अखलाक की अजमत को दुनिया के सामने जाहिर किया जाए, यकीनन कायनात उन्हीं से मुतस्सिर होती है और अगर मअअज़ अल्लाह बुग़्ज़ हो, हसद हो और सती (साधारण, मामूल,) सा मामला जाहिर करने की तेहरीक़ हो, तो फिर वह आजमातें जो शरीयत की मंशा में है वाह लोगों तक नहीं पहुंचाई जा सकती। इसलिए आज सय्यद ए आलम नूर ए मुजस्सम सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम की मुकद्दस सीरत का पैगाम उस्वा-ए-ह-स-ना की तहरीक और माहौल से हर तरह की गंदगी और खुराफात की जड़ी बूटियों के खात्मे के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम का वह रोशन किरदार कि जो हर ऐब से पाक है, हर कजी से मुबर्रा है, हर आलूदगी के मिकाबले में उस के अंदर सुथरापन है , उस को उसी खुतूत पर बयान करने की ज़रूरत है जो हक़ीक़त के मुताबिक़ सिलसिला है और जो सुफ्फा से ले कर आज तल मुस्लिम उम्मा का तुर्रा इम्तियाज़ है । इसमें अगर इस तरह की तक्सीम की जाए कि मआज़-अल्लाह,नमाज रोजा के लिहाज से तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इल्म है, शरीयत के उमूर / मामलों के लिहाज से आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम जानते हैं मगर दुनिया के उलूम के लिहाज़ से दुनिया वाले बेहतर जानते हैं , तो फिर उस्वा-ए-ह-स-ना को जो पेश करने का मंशा-ए-खुदावंदी था, वह सारा का सारा सिलसिला, उसकी हिकमतें और उसके तकाज़े खत्म हो जाएंगे।

इस वास्ते हकीकत यह है कि हमारे नबी अलैहिस्सलाम का उस्वा-ए-ह-स-ना इतना जामेअ है कि अगर मस्जिद में सजदा करना है तो उसका बयान भी उस्वा-ए-ह-स-ना मैं मौजूद है और अगर ईवाने सदर मैं बैठकर

हुकूमत करनी है तो उसका तरीका भी उस्वा-ए-ह-स-ना मैं मौजूद है। अगर मसनद-ए- तदरीस पर बैठकर पढ़ाना है उसका तरीका भी उस्वा-ए-ह-स-ना मैं मौजूद है, अगर खेत में काश्तकारी करनी है तो उसका तरीका भी उस्वा-ए-ह-स-ना मैं मौजूद पर, छोटे-बड़े तमाम एहकामात का मुकम्मल बयान उस्वा-ए-ह-स-ना मैं मौजूद है। दुनिया के उमूर की वज़ाहत ,तशरीहात सारी की सारी उस्वा-ए-ह-स-ना के नीचे है। यह तक्सीम तब होती जब इस्लाम का ताल्लुक दुनियावी कामों से हटकर सिर्फ दीन के कामों के साथ होता। तो जब इस्लाम दीन और दुनिया दोनों में रहनुमाई करता है और दोनों के लिए एहकाम इस्लाम में मौजूद है, तो फिर क्या इस्लाम दीन में नबी अलैहिस्सलाम को आइडियल करार देकर दुनिया में किसी और को आइडियल बनाना चाहता है ? हरगिज़ ऐसा नहीं है। हमारे नबी अलैहिस्सलाम के लिए रब्बे ज़ुलजलाल ने अल्फाज इस्तेमाल किए, उनसे यह वाजेह तौर पर पता चलता है

▶" لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ "

कि अगर तुमने इबादत करनी है मस्जिद में, तो उसके लिए भी इन्हीं का तरीका तुम्हारे लिए बेहतरीन तरीका हो जो बाइसे निजात है, अगर दुनियावी उमुर का एहतमाम करना है- सियासते मदनिया है, तदबीर उमूर है, तस्वीरें मंजिल है, लोगों के दुख सुख में शरीक होना है और मुआशरे को अमन का गहवारा बनाना है और जुल्मों सितम की जड़े काटनी है और कायनात में हुक्मरानी करनी है, तोहर लिहाज से वह सारे का सारा सबक भी सय्यद ए आलम नूर ए मुजस्सम सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम के रोशन तरीके में मौजूद है। " लकुम" मैं खिताब हे कयामत तक की इंसानियत को, आगे لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَ ذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا इसमें "लकुम" का बयान है। हर इंसान, उसके लिए सबक है इसमें, फिर बतौर-ए-खास किसके लिए ? फरमाया जो इसे देखकर असर कबूल करता है। दावत तो सबको है मगर जिक्र तारीफ के तौर पर उनका होगा जो हक को कबूल करते हैं। जिस तरह कि कुरान ए मजीद को कहा गया " हुदल्लिन-नास" यह हिदायत है सारे इंसानों के लिए, लेकिन जहां तारीफ की वहां कहा गया " हुदल्लिल-मुत्तक़ीन" यह हिदायत है परहेजग़ारों के लिए कि जिन्होंने उस हिदायत को कबूल कर लिया, तारीफ करते वक्त तज़किरा उनका होगा। इस वास्ते आखिर में रब्बे ज़ुलजलाल ने फरमाया

لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْيَوْمَ الْاٰخِرَ"

जो भगोड़ा है सरकश है, वह इस उस्वा-ए-ह-स-ना पर अमल नहीं करता और जो आखिरत की फिक्र रखता है, इस (उस्वा-ए-ह-स-ना) पर अमल जरूर करता है। जो रब का जिक्र करने वाला है। وَ ذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا अल्लाह का जो जिक्र करता है, यादे इलाही करता है, उसके लिए दरे रसूल को छोड़ना मुमकिन नहीं है। याद रब को करता है, मगर देख के नबी अलैहिस्सलाम को करता है। उस्वा इनका है, तरीका इनका है, सामने आइडियल ये हैं और जिक्र अल्लाह का करता है। तो यहां पर यह जो तक्सीम थी उसको भी खत्म कर दिया गया कि यह कोई ना कहे कि यह नबी की पार्टी है और फलां अल्लाह की पार्टी है। रब्बे ज़ुलजलाल ने फरमाया मेरा जिक्र करता ही वह है जो मेरे नबी के तरीके को सामने रखता है। "तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम की जिंदगी में बेहतरीन नमूना है "। अब जिसने नमूने पर चलना है, जिन का नमूना है, उनकी तरफ तवज्जो तो करनी है, उनकी तरफ ध्यान करना है, उनकी तरफ सोच को लगाना है, उन्हें याद करना है, उनका दिल में इश्क रखना है। जिनका इश्क ना हो , उनकी तरह इंसान अपने आप को करने को मजबूर ही नहीं कर सकता। जिनसे प्यार होता है, तो फिर बंदे का दिल करता है कि जैसे वह बातें करें, मैं भी वैसे ही करूं। जैसे वह बैठें, ऐसे में भी बौठूँ। जैसे उनके कपड़े वैसे मेरे भी कपड़े हो, जैसे उनके बालों का अंदाज था वैसा मेरा भी हो। पहले इश्क उनका होगा, फिर उनकी अदा होगी और फिर अल्लाह तक रसाई होगी।

इस बुनियाद पर इस उस्वा-ए-ह-स-ना के पैगाम में भी रब्बे ज़ुलजलाल ने वाजेह कर दिया कि जो डायरेक्ट मुझे तक आने का पैगाम देता है, वह उस्वा-ए-ह-स-ना से बेखबर है। जिन के नजदीक यह हो कि उनका ख्याल आ

जाए नमाज में, तो नमाज टूट जाएगी। वह फिर नमाज उस्वा-ए-ह-स-ना के मुताबिक पढ़ कैसे सकेगा ? क्योंकि पहले तो जिनका तरीका है उनका ख्याल आएगा, उनका तसव्वुर आएगा, सिर्फ तसव्वर नहीं उनसे प्यार भी होगा उनसे इश्क भी होगा उनसे इश्क भी होगा और फिर उनके इश्क से उनके तरीके पर चलेगा तो आगे अल्लाह की ज़ात तक पहुंचेगा, तो रब्बे ज़ुलजलाल ने फरमाया "

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ"لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَ ذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ؕ

फरमाया जो मेरे नबी अलैहिस्सलाम के तसव्वुर और याद में बैठकर, उनके तरीके को अपनाता है, यह कौन इंसान है? फरमाया यही तो फिक्र-ए-आखिरत वाला है। यही अल्लाह वाला है, यही रब का जिक्र करने वाला है। जो उस्वा-ए-ह-स-ना का पैगाम नबी-ए-अकरम, नूर ए मुजस्सम सल्लल्लाहु अलेही वसल्लम की सीरत का पैगाम है रब्बे ज़ुलजलाल ने उसका तज़किरा करते हुए भी यह क्लियर फरमा दिया- सीरत इनकी है किरदार इनका है तरीका इनका है। नतीजा इसका क्या होगा ? फरमाया नतीजा यह होगा कि जो बंदा इस पर चलेगा वह कैसा है ? वह फिक्रे आखिरत भी रखने वाला है, रब्बे ज़ुलजलाल का जिक्र भी करने वाला है।

इसमें " फी रसूलिल्लाह" नबी ए अकरम सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम का जिक्र करते हुए सिर्फ " रसूलिल्लाह" कह दिया गया है। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम का नाम नहीं लिया गया है। सरकारे दो आलम नूर ए मुजस्सम सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम कि उन खूबियों में से जो आपके लिए खास है, उनका भी तज़किरा नहीं किया गया। मिसाल के तौर पर यूं कहा जाता कि " लकद काना लकुम फी मुहम्मदिन" तो नाम आ जाता। ऐसा भी नहीं कहां गया और यह भी नहीं कहा गया कि " लकद काना लकुम फी ख़ातमिन नबीय्यीन उस्वतुन ह-स-ना" जो सारे नबियों के खातिम हैं वह तो एक ही जात है जो हमारे आका की जात है। नाम नहीं होता तो वस्फ-ए-खास है वह जिक्र कर दिया जाता। वह भी जिक्र नहीं किया गया। ना यह कहा गया " हजरत ए मोहम्मद सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम की जिंदगी में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है" और ना यह कहा गया कि ""ख़ातिमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम की जिंदगी में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है" और ना यह कहा गया कि " रहमतुल्लिल आलमीन सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम की जिंदगी में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है"। आपके सिवा कोई रहमतल्लिल आलमीन भी नहीं। तो "रहमतल्लिल आलमीन" से भी आप ही का ही तज़किरा हो जाता , लेकिन यहां पर रब्बे ज़ुलजलाल ने उस्लूब इस्तेमाल किया। आप मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम भी हैं, आप आप खातिम उन नबिय्यीन भी हैं, आप रहमतुल्लिल आलमीन भी हैं (सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम) मगर रब्बे ज़ुलजलाल ने फरमाया "लकद काना लकुम फी रसूलिल्लाहि उस्वतुन ह-स-ना"। अगरचे जितने रसूल हैं सब ही अल्लाह ही के रसूल हैं। सब पर रसूलुल्लाह का लफ़्ज़ बोला जा सकता है और सब को रसूलुल्लाह कहा जाता है, सबको नबी अल्लाह कहा जाता है, मगर ख़ालिक़-ए-कायनात जल्ला जलालुहू ने खिताब करके कयामत तक की इंसानियत को आगे ज़िक्र लफ्ज़े रसूल से कर के मेरे नबी अलेहिस्सलाम का, रब्बे ज़ुलजलाल ने वाज़ेह कर दिया " यह कयामत तक के इंसानो, जब रसूलुल्लाह कहा जाए, अगरचे रब के और भी सैकड़ों रसूल हैं, हजारों नबी हैं, मगर तुम्हारी सोच सीधी, यह लफ्ज़ सुनते ही, मदीना शरीफ पहुंच जाना चाहिए। लफ्ज़े रसूल तुम्हारे ज़हनों में इतना पक्का होना चाहिए कि रसूलुल्लाह का लफ्ज़ सुनते हैं, तुम्हें फौरन याद अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आना चाहिए। लफ्ज़े रसूल सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम के जिक्र से [जैसे कि नाम ले किसी का दो पूरन उनका ख्याल आता है], किसी का लक़ब-ए-ख़ास जिक्र करें तो फौरन उनका ख्याल आता है, तो फरमाया गया : तुम्हारे नजदीक शान ए रिसालत इनके हिसाब से इनके लिहाज से इतनी वाजेह होना चाहिए कि जिस वक्त भी " रसूलुल्लाह" कहां जाए ऐसे तुम मानते सारे रसूलों को हो, मगर तुम्हें पता होना चाहिए कि यहां पर हमें हजरत मूसा अलैहिस्सलाम की की इक्तिदा का हुक्म नहीं दिया जा रहा है,यहां पर हमें हजरत ईसा अलैहिस्सलाम की पैरवी का हुक्म नहीं दिया जा रहा, यहां पर हमें हजरत नूह अलैहिस्सलाम की पैरवी का हुक्म नहीं दिया जा रहा, यहां पर हमें हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की पैरवी का

हुक्म नहीं दिया जा रहा , उनके नक्शे कदम पर चलने का हुक्म नहीं दिया जा रहा, वह सारे मोहतरम है लेकिन यहां पर जो हमें हुक्म दिया जा रहा है तो वहा आमिना के लाल हजरत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम की पैरवी का हुक्म दिया जा रहा है ताकि दुनिया कयामत तक यह समझे कि हमने सब तक पहुंचना है तो इनके जरिए से पहुंचना है।

अब देखो दीन का मिजाज़ कैसा है ? अभी यह नारा ए रिसालत लगा तो आपने कहा " या रसूल अल्लाह" सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। तो " कुछ लोग" कहते हैं अल्लाह के तो सैकड़ों रसूल हैं, तुम किन को पुकार रहे हो ? तुम रसूलुल्लाह कह कर किन का जिक्र कर रहे हो ? रब के तो सैकड़ों रसूल है तो तुम "मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" कहो तो पता चल जाएगी किस रसूल की बात हो रही है। तो मैं कहता हूं आयत पढ़ो, कुरान का तो मिजाज ही यह है। अब " लकद काना लकुम फी रसूलिल्लाह " मैं यह नहीं है " फी मुहम्मदुर्रसूलिल्लाह" , सिर्फ है " फी रसूलिल्लाह" । मगर कोई एक भी ऐसा नहीं है जिसे यह सुनकर शक गुजरता हॉकी पता नहीं बात किसकी हो रही है। सबको पता है बात हमारे महबूब की हो रही है। मिजाज ही कुरान और सुन्नत का यह है कि लफ्ज़े ए रसूल सुनते ही हमारी सोच मदीना शरीफ जाएगी। अब जब कुरान उतरा, तो उस वक्त से अब तो सदियां गुजर गई हैं। कुरान उतरे जब अभी चंद साल हुए थे- हमारे नबी अलैहिस्सलाम को एलान ए नबुव्वत किए हुए,उस वक्त के लोगों को भी यह यकीन है कि अगर्चे पहले लफ्ज़े मोहम्मद नहीं आ रहा मगर " लकद काना लकुम फी रसूलिल्लाह" से मुराद ना हजरत आदम अलैहिस्सलाम हैं ना ही हजरत ईसा अलैहिस्सलाम हैं, ना इनके दरमियान का कोई नबी मुराद है । मुराद है तो हमारे नबी अलैहिस्सलाम हजरत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

इस बुनियाद पर आज की इस तरह की जो बद मजा गुफ्तगू है और जो फीका अंदाज है, उसकी शरीयत में कोई इजाजत नहीं है। जिस वक्त दिल सुथरा हो दिल साफ हो रास्ते खुद ब खुद मोअय्यन हो जाते हैं कि जो शख्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम कह रहा है, बोल रहा है, यकीनन यह और किसी से बात नहीं कर रहा बल्कि यह अपने नबी अलैहिस्सलाम से बातें करता जा रहा है।

मिसाल के तौर पर आप देखते हैं की एक जगह लोग बैठे हो, एक शख्स को उसका बेटा आकर कहे "अब्बू"। अब अगर जी वहां पर सैकड़ों अब्बू/ बाप बैठे है, पर उसे पता है कि मैं सैकड़ों की बात नहीं कर रहा, मैं तो अपने ही अब्बू की बात कर रहा हूं। अगरचे वह नाम लेकर नहीं कह रहा, वह सिर्फ अब्बू कहता है, वह सिर्फ अपने बाप को बाप कह रहा है नाम नहीं ले रहा, उसे पता है कि मैं औरों की बात नहीं कर रहा, मैं अपने की बात कर रहा हूं। और उसके बाप को पता है कि अगर्चे यहां सैकड़ों अब्बू बैठे हैं मगर यह मेरी बात कर रहा है। इस बुनियाद पर अगर नियत में फितूर ना हो, किसी तरह की कोई उलझन है ही नहीं। रब्बे ज़ुलजलाल ने अब यहां वाजेह किया है,

" لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ " हर मसलक का बंदा जब आयत पड़ेगा अपनी जरूरत के पेशेनजर वो यह समझेगा, यह बताएगा कि यहां हजरत ईसा अलैहिस्सलाम के नक्शे कदम की बात नहीं हो रही, यहां तो आमीना के लाल के नक्शे कदम की बात हो रही है। इस बुनियाद पर ,मुत्लकन रिसालत को नाज है हमारे नबी अलैहिस्सलाम पर और मुत्लकन रिसालत के तज़किरे से ज़हन जाता ही इस तरफ है और पहुंचता ही यहां है कि अगरचे हर पैगंबर का नक्शे कदम अज़ीम, उनका उस्वा-ए-ह-स-ना अज़ीम मगर उन सारे, जो जितने भी उस्वा-ए-ह-स-ना हैं, उससे जो जामेअ उस्वा-ए-ह-स-ना है जो गुलदस्ते की शक्ल है, जिसमें हर फूल भी है, हर खुशबू भी है, हर चमक भी है, हर तजल्ली भी है ये वो उस्वा-ए-ह-स-ना है जो रब्बे ज़ुलजलाल ने मेरे नबी अलैहिस्सलाम को अता फरमा आया है। चूँकि इस उस्वा-ए-ह-स-ना ने कयामत तक की जरूरतें पूरी करना थी, इसने कयामत तक के मसाईल का हल करना था। अब जिन की उम्मत पहुंचनी हो 19वीं सदी तक 25 वीं सदी तक और उस्वा-ए-ह-स-ना जो है वह सिर्फ पहली सदी तक गुजारा कर सके, फिर उनके उस्वा-ए-ह-स-ना की

कयामत तक के लिए रब्बे ज़ुलजलाल दावत क्यों देता की ऐ 20वीं सदी के मुसलमानों कोई मसला हल करना है तो मेरे नबी के कानून को देख लो, उनकी शरीयत को देखो, उनके तरीके को देखो, तो रब्बे ज़ुलजलाल ने पहले जामेअ ही इतना बनाया है कि जो भी सच्चे दिल से अपनी बीमारी का इलाज चाहेगा, हठधर्म जिद्दी नहीं बनेगा तो नबी अलैहिस्सलाम का उस्वा-ए-ह-स-ना जरूर उसकी रहनुमाई करता नजर आएगा।

खालिके कायनात जल्ला जलालुहू ने कयामत तक के लोगों को जन्नत लेने के लिए मोतवज्जे सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ कर दिया। हालांकि कुरान, कुरान के और कयामत तक के लिए मौजूद है तो ख़ालिक़-ए-क़ायनात ने सिर्फ कुरान की दावत नहीं दिया। सिर्फ कुरान की दावत होती तो फिर नबी अलैहिस्सलाम के उस्वा-ए-ह-स-ना की तरफ रीडायरेक्ट ना किया जाता। फिर दावत एलल कुरान होती, कि कुरान पढ़ो और जन्नत पाओ, कुरान की तरफ आओ और जन्नत पाओ। कुरान की तरफ आने का काम होगा ही तब जब उस्वा-ए-ह-स-ना सामने होगा। उस्वा-ए-ह-स-ना बशरीयत का होता है, उस्वा-ए-ह-स-ना एक पैकर का होता है। तो यह वजह है कि रब्बे ज़ुलजलाल ने अपने नूर को लिबासे बशर में जलवागर किया कि कयामत तक, जब 'वही' बंद हो चुकी होगी, कुरान उतर चुका होगा, उसके बाद भी जब लोगों को जरूरत पड़ेगी कि इस उतरे हुए कुरान पर प्रैक्टिकल करना हो तो कैसे करें, तो रब्बे ज़ुलजलाल फरमा रहा है, ना ही नई वही उतरेगी ना नया रसूल आएगा। तुम्हें मेरे नबी अलैहिस्सलाम की अदाओं को देखते जाना है और उतरे हुए कुरान पर अमल करते चले जाना है। उनकी अदा यह साबित करेगी कि जो मुझ पर उतर आए यह कयामत तक के लिए काफी है। उनकी आधा यह साबित करेगी की दावत इलल कुरान है ही दावत इलर्रसूल और दावत इलर्रसूल है ही दावत इलल कुरान। और यह मजमुई तौर पर यह है दावत इलल्लाह ,अल्लाह की तरफ ले जाने वाला अंदाज।

इस बुनियाद पर वह एक नजरिया जो कुरान मजीद में जिक्र है,उसका सबसे बड़ा प्रैक्टिकल हमारे नबी अलैहिस्सलाम के पैकर में है और वह भी इस अंदाज में, यह नहीं कि कुरान उतरा तो फिर सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह अदाएं सीखी हो, नहीं ! हजरत आयशा सिद्दीका रदियल्लाहु तआल अन्हा कहती हैं, " उनका (हमारे नबी का) अख़्लाक़ कुरान है " और ख़ुल्क़ वो होता है जो तबीयत में हो मिजाज में हो, जबिल्लत में हो , जिस कैफियत पर बंदा पैदा हो वह अरबी जुबान में खुल्क़ कहलाता है। तो रब्बे ज़ुलजलाल में जो कुछ कुरान में रखा, सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तबीयत में पहले ही डाल दिया था। नाजिल कुरान बाद में हुआ लेकिन उसकी जो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कैफ़ियत में असर है वह सारे का सारा पहले मौजूद है। किस वास्ते अल्लाह तआला फरमाता है नूरुन अला नूर। एक नूर मिजाज में रखा, दूसरा नूर "वही" से नाज़िल कर दिया। फरमाया गया है कि 40 साल तक अगर " वही " ना भी आती, अंदर वाला नूर खुद ही बाहर निकलना शुरू हो जाता।

इस बुनियाद पर सय्यद ए आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में उस्वा-ए-ह-स-ना रखा गया और "में" के आगे मुज़ाफ मेहज़ूफ होंगे। ग्रामर के लिहाज से आपके बोलने में, आपके खाने में, आपके पीने में ,आपके चलने में, आपके उठने बैठने में | " लकद काना लकुम फी रसूलिल्लाह"। लफ्ज़े रसूल से पहले वह एक लफ्ज़ जो, जिस तरह का माहौल होगा उसी तरह का वह ग्रामर के लिहाज से निकाला जाएगा।

जिस तरह देखते हो ना

1). "बिस्मिल्लाह" ▶ तो इसका तर्जुमा करते वक्त अगर आप बिस्मिल्लाह कहेंगे खाना खाते वक्त तो अब तर्जुमा क्या होगा

तर्जुमा :अल्लाह के नाम से खाना खाता हूं। अरबी जुबान में मुताअल्लक 'आअकुलु महज़ूफ होगा। "बिस्मिल्लाहि आअकुलु" ▶ अल्लाह के नाम से खाता हूं।

अगर लिखते वक्त बिस्मिल्लाह कहोगे तो मतलब होगा ?

2). "बिस्मिल्लाहि अक़्तुबू" ▶ अल्लाह के नाम से पढ़ता हूं।

यह वुसअत है अरबी जुबान की ये हुरूफ़ किसी "फेअल" के मुताल्लिक होते हैं। इस बुनियाद पर जामेअ अंदाज़ ए कुरान ए मजीद का। फरमाया, तुम जिस जेहत को देखोगे की बीमारी आ जाए तो वक्त कैसे जाना है ? फरमाया, लकद काना फी रसूलिल्लाहि उस्वतुन ह-स-ना" नबी अलैहिस्सलाम की हालत ए मर्ज़ में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना मौजूद है। नबी अलैहिस्सलाम की हालाते सेहत में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना मौजूद है। इस बुनियाद पर जामेअ कुरानी निज़ाम को जिस पैकर ने प्रैक्टिकल करके समझाया है, उस प्रैक्टिकल के अंदाज को उस्वा-ए-ह-स-ना से ताबीर किया गया है। और आज हमारे लिए यह लाज़िम है कि हम अपने हर किस्म के करंट इश्यूज़ में , हालाते हाज़िरा में, हर जेहत में उस उस्वा-ए-ह-स-ना को सामने रखेंगे और उसके मुताबिक अपनी जिंदगी बसर करें।

सय्यदुना उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु , उन्होंने मेरे नबी अलैहिस्सलाम के घर के ऊपर ,जो एक जगह थी,जहां सरकार तशरीफ फरमा थे, उस हुजरे में दाखिल हुए तो अंदर कोई आराइश वाली चीज तो मौजूद नहीं थी। खजूर के पत्तों की बनी हुई रस्सी से बुनी हुई चारपाई या बुनी हुई चटाई दोनों रिवायात मौजूद हैं, उनके निशान नदी अलैहिस्सलाम के जिस्म-ए-पुरनूर में बने हुए थे। ना चटाई के ऊपर चादर थी, ना बदन पर कमीज़ थी। तो हजरते उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु कहने लगे, " य रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैक़ा वसल्लम, वो कहाँ कैसर ओ किसरा की सहूलतें और कहां दोनों जहां की सरदार का यह हुजरा। आप हुक़्म दे , कम से कम कोई आराम का बिस्तर तो आपके लिए तैयार कर लें। तो नबी अलैहिस्सलाम ने फरमाया, " ऐ उमर ! अभी वो जाहिलियत वाली सोच तुह्मारी खत्म नही हुई ? और फरमाया कि मेरा और दुनिया का ताल्लुक क्या है ? मेरा और दुनिया का ताल्लुक तो ऐसा ही है जैसे कोई सवार गुज़र रहा हो, दोपहर का वक़्त हो, धूप हो तो दरख़्त के नीचे बैठ जाए। अब उस का दरख्त से कोई प्यार नही होगा, उसका तो ताल्लुक मंज़िल से है। वो दरख्त के साथ दिल लगाने नही बैठेगा। उसे तो निकलना है और मंज़िल की तरफ जाना है। इस वास्ते मेरा और दुनिया का आरज़ी सा ताल्लुक है। मै क्या बंदोबस्त करूँ अपने लिए और क्या अपने कमरे के अंदर मै तकिये / सोफे रखूँ और क्या मै अपने लिए मखमल और रेशम के बिस्तरों का एहतिमाम करूँ। फरमाया, वो दुनिया वाले हैं , उन के लिए सबकुछ दुनिया में ही है जो कुछ है। रब्बे ज़ुलजलाल ने हमारे लिए आख़िरत का बंदोबस्त किया हुआ है। तो ये सय्यदे आलम, नोरेन मिजस्सम, शफी-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वो अंदाज़, वो दरबारे शाही कि कैसर ओ किसरा जिन की गुलामी में आ जाएं, जिन के सामने घुटने टेक दें , वो दरबारे शहनशाहे आलम का कि दुनिया के बड़े-बड़े शहनशाह , जिनका कलिमा पढ़ने में फख़्र महसूस करें , उन की अपनी , उस दरबारे शाही का जो मामूल है, उस के अंदर सय्यदे आलम नूरे मुजस्सम शफी-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो अंदाज़ रखा है, उस अन्दाज़ के पेशेनज़र आज के वी.आई.पी कल्चर के खात्मे की बात की जा सकती है।

सय्यदे आलम नूरे मुजस्सम शफी-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास माले ग़नीमत आया। हज़रते सय्यदुना अली रदियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा, " ऐ फातिमा ज़हरा (रदियल्लाहु तआला अन्हा) ! तुम्हारे अब्बा जी के पास बहुत सी लोंडियाँ (ख़ादिमाएं) आ गई हैं। तो तुम जाओ, तुम भी सवाल करो कोई खादिमा तुम्हें दे दें, तुम्हारा यह हर वक्त काम का जितना ज्यादा है। { जैसा कि दूसरे मुकाम पर हदीस में यह मौजूद है कि निशान पढ़ चुके थे हाथों पर, चक्की चलाने की और निशान पढ़ चुके थे पानी भरे हुए मश्किज़े उठाने के } तो वह कायनात के सरदार की शहजादी हजरत फातिमा रदियल्लाहु अन्हा जब नबी अलैहिस्सलाम के पास गईं और सवाल किया तो मेरे महबूब अलैहिस्सलाम ने फरमाया ए फातिमा ! मैं तुझे इससे अच्छा तोहफा देता हूं , क्या करोगी तुम खादिमा का ? अपना काम तुम खुद करो। तुम जब सोने लगो तो सुब्हान अल्लाह पढ़ो, अल्हम्दुलिल्लाह पढ़ो, अल्लाहू अकबर पढ़ो। वह तस्बीहे फातिमा का दर्स दिया , उनको वापस कर दिया।

आज किसकी बेटी की शान हजरते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा के मुकाबले में लाई जा सकती है ? और किसकी मुट्ठी में वह खजाने हैं जो खजाने मेरे नबी अलैहिस्सलाम की मुट्ठी में थे। इसके बावजूद यह समझा अगर आज अपनी बेटी को मैं चाहूं तो जन्नती महल दे सकता हूं, मैं इनके लिए सारे एहतिमाम कर सकता हूं। मगर कयामत तक की उम्मत की बेटियों को ख्याल आएगा उनके लिए एहतिमाम फिर कौन करेगा ? उनके लिए फिर किस तरह के प्रोटोकॉल होंगे ? उनके लिए किस अंदाज़ के फिर एहतिमाम होंगे ? इस वास्ते फरमाया मेरी बेटी ! तू मेरी बेटी है और मुझे बड़ी अजीज़ है और मेरा उस्वा-ए-ह-स-ना तुम्हारे लिए सामने है। सरकारे दो आलम नूरे मुजस्सम शफी-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर जिब्राईल-ए-अमीं ने कहा था कि रब सलाम ही कह रहा है और रब यह कह रहा है कि यह महबूब अगर तुम चाहो तो मैं उहद पहाड़ सोने का ना बना दूं कि ऐसा सोना जो मोबाइल सर्विस पर हो। तुम जिधर जाओ यह भी साथ चलता जाए । तुम्हें यह भी तकलीफ ना करना पड़े कि वापस आऊँ मदीना शरीफ और सोना काट के किसी को दूँ। तुम्हारा डेरा हो, वहां उहद का भी बसेरा हो। उहद साथ साथ चले। महबूब अगर चाहो तो सारा सोने का बना दूँ। तो मेरे नबी अलैहिस्सलाम ने कहा, " ए अल्लाह, मुझे इस सोने की जरूरत नहीं। मैं 1 दिन भूखा रहूंगा 1 दिन खाना खा लूँगा। मैं इस अंदाज में जिंदगी बसर करूंगा। इसकी जो दूसरी हिक़्मतें में थी वह तो अपनी जगह रह गईं, मगर कयामत तक नादारों के साथ जो हमदर्दी कर दी मेरे नबी अलैहिस्सलाम ने , फरमाया जिनके पास कयामत को कुछ नहीं होगा, कयामत तक के लिए जो नादार लोग हैं, उन्हें यह तो सहारा मिलेगा की अगर हम भूखे हैं तो क्या हुआ, हमारे नबी अलैहिस्सलाम ने भी पेट पर पत्थर बांध के खंदक खोदी थी। तो हम भूखे हैं तो कोई बात नहीं, यह भूख तो हमारे नबी अलैहिस्सलाम ने भी काटी है। सरकार चाहते उहद सोने का होता मगर फरमाया फिर मेरी उम्मत के घर सोने के नहीं होंगे तो उनके दिलों में ख्याल आएगा, उनके दिलों में तड़प होगी, तो सैयद ए आलम नूर ए मुजस्सम शफी-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने उस्वा-ए-ह-स-ना से, अपनी जिंदगी से, जिंदगी के शबो-रोज से इस अंदाज से आगे पैगाम पहुंचाया कि आज भी अगर उन उमूर (कामों) की तरफ एक इंसान तवज्जो करता है तो उसके गम खत्म होते हैं, दुख दूर होते हैं, उसे वाकई हौसला मिलता है की कोई बात नहीं है, यह मैंयार नहीं अल्लाह के राजी होने का की जरूरत पैसा ही हो तो रब राजी होता है। अब सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कितना रब राजी लेकिन सैयद ए आलम नूर ए मुजस्सम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपन उस्वा-ए-ह-स-ना से, यहां तक कि कई कई दिनों तक अज़्वाजे मोतह्हरात के घर में चूल्हा नहीं जला, खाने पकाने के लिए था ही कुछ नहीं। पानी था या खजूर उस पे गुजारा होता रहा। सैयद ए आलम नूर ए मुजस्सम शफी-ए-मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह पैगाम दिया ताकि मुवासात हो, हमदर्दी हो और इस तरह उम्मत जब गुजारा कर रही हो, उनके लिए हौसला हो की कोई बात नहीं है हमारे लिए हमारे नबी अलैहिस्सलाम की जिंदगी में बेहतरीन नमूना मौजूद है।

मोहतरम सामईन हजरात ! बुखारी शरीफ में हज्जतुल विदा के मौके का एक अहम वाक़िआ मौजूद है। जिस वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम काबातुल्लाह के पास ज़मज़म का पानी पीने के लिए आगे बढ़े, तो ज़मज़म का कंट्रोल हजरत अब्बास यदियल्लाह तआला अन्हु के पास था। चूँकि पहले हजरत अब्दुल मुत्तलिब के बाद यह वज़ारत हजरत अब्बास यदियल्लाह तआला अन्हु के पास थी, जाहिलियत में भी , और जब उन्होंने कलमा पढ़ा तो फिर भी ये बदस्तूर उन्हीं के पास शोबा रखा गया। अब फतह-ए-मक़्क़ा का मौक़ा है। हज्जतुल विदा के मौक़े पर जब नबी अलैहिस्सलाम

ने पानी माँगा, तो हज़रते अब्बास रदियल्लाह अन्हु ज़मज़म के कुंए के पास खड़े थे। चचा हैं नबी अलैहिस्सलाम के और सरकार के उम्मती भी हैं। तो जब नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने पानी का तकाज़ा किया, हज़रते अब्बास रदियल्लाहु अन्हु ने चाहा कि मै जरा खुसूसी अंदाज़ में, VIP तरीके से सर्विस करूँ अपनी खिदमत पेश करूँ। तो कहा अपने बेटे फज़ल से कि जाओ अपनी अम्मी के पास, वो जो खास किस्म का पानी है न

उम्मे फज़ल के पास, वो पानी नबी अलैहिस्सलाम के लिए लेकर आओ। जमज़म का पानी हम सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पिलाएं। तो नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने फरमाया मुझे यही पानी पिलाओ, यहीं से पिलाओ जहाँ से सभी लोग पी रहे हैं। हज़रते अब्बास ने कहा, नहीं। फज़ल तुम जाओ [फजल बेटे हैं जिनकी बुनियाद पर आपकी अहिल्या को उम्मे फज़ल कहा जाता है।] फजल जाओ अपनी अम्मी के पास, सरकार ने पानी मांगा है, तो वो जो खास पानी वहाँ रखा हुआ है, वो पानी लाओ। नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम को जमज़म का पानी पिलाएं। तो नबी अलैहिस्सलाम ने फरमाया, "मुझे यहीं वाला पानी पिलाओ। जो उन्होने कहा "या रसूलल्लाह सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम - इस पानी में सारे हाथ डालते हैं; तो हमने वो मख्सूस

पानी रखा हुआ है। वो ला कर हम आपको पिलाते हैं। तो नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने तीसरी बार फरमाया, "मुझे यहीं से पिलाओ। अब उन का ख्याल था कि आप के लिए कोई एहतिमाम हम करें, कि यहाँ से तो सारे ही पानी पी रहे हैं, और वो डोल मांगा जिस से पानी कुंए से निकाला जा रहा था फरमाया मुझे इस से पिलाओ। अब वो (हजरते अब्बास) चाहते थे कि खास एहतिमाम किया जाए। मेहबूब अलैहिस्सला ने जब तीसरी मर्तबा फरमाया जो हज़रते अब्बास रदियल्लाहु अन्हु ने वही पानी पेश किया। सरकारे दो- आलम नूरे मुजसम शफी ए मोअज्जम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वही पानी जहाँ से आम लोग पानी पी रहे थे, वो पानी पिया। एक रिवायत में है कि वो डोल दे दिया, हज़रते अब्बास रदियल्लाहु अन्हु ने, नबी अलैहि सलातो वस्सलाम को तो सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस से पानी लेकर पी लिया। अब यहाँ पर मुहद्दीसीन ने; बुखारी के शारिहीन ने भी लिखा कि असल नज़ाफत है, तहारत है और जब तक कोई बाजेह तौर पर गड़बड़ नजर न आए जो पानी पाक है तो पाक ही समझा जाएगा। और उस पर यही हुक्म लगाया जाएगा। तो ठीक है अगर्चे आम लोग पी रहे हैं मगर पानी तो पाक है। तो सय्यदे आलम नूरे मुजस्सम शफी ए मोअज्जम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कयामत तक के लिए VIP कल्चर के खात्मे का ऐलान करते हुए फरमाया मैं रसूलों का सरदार हूँ। जिस मश्किज़े और डोल से बिलाल पानी पिएंगे, मैं भी वहीं पानी पी लूंगा। हज्जतुल विदाअ का मौका है, हजारो लोग जहाँ आए हुए हैं, मैं अपने लिए कोई खुसूसी एहतिमाम नहीं करने दूँगा। हज़रते अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते रहे बार बार "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैक़ा वसल्लम , ये क़रीब ही तो घर है उम्मे फजल के पास वो मख्सूस पानी है। वो फज़ल जाते हैं, पानी लेकर आते हैं। तो नबी अलैहिस्सलाम ने फरमाया नही नही। ये यहाँ से, जहाँ से आम लोग पानी - पी रहे हैं, मैं भी यहाँ से पानी पीता हूँ। इसके बाद मेहबूब अलैहिस्सलातो वस्सलाम लोगों के पास आए जो कुएं से पानी निकाल रहे थे और फरमाया शाबाश ! करो करो अच्छा कर रहे हो। पानी निकाल रहे हो, अमल- ऐ. सालेह कर रहे हो। शाबाशी भी दी उनको, उनका हौंसला बढ़ाया, उनको दाद दी और उसके बाद अपने कंधे की तरफ इशारा किया और फरमाया- अगर - ये खतरा मुझे न होता कि तुम मंगलूब न हो जाओ, तो मै नीचे उतरता कुंए में, मैं भी रस्सा यहाँ रखता। जो रस्सा रख के, पानी खिंच कर बाहर निकाला जाता है। फरमाया मैं भी रस्सा यहाँ रखता और पानी बाहर निकालता मगर मैं क्यों नहीं उतर रहा, कि अगर मेने रस्सा रखा, तो हर एक को तड़प होगी कि मेरी इक्तिदा करे। फिर तुम्हे कोई ड्यूटी नही करने देगा। फिर तुम मंगलूब होगे, लोग ग़ालिब आ जायेंगे, फिर ड्यूटी वालों को ड्यूटी कोई नही करने देगा, फिर यहाँ भीड़ हो जाएगी ये सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता है कि मेरी अदाओं पर उम्मत चलती कैसे है। मेरा रस्सा रखने की देर होगी तो हर कंधा रस्से के लिए तैय्यार जाएगा। तो हज़ारों लोगों के लिए एक रस्सा पूरा कैसे आए ? और फिर यहाँ सब कंट्रोल कैसे हो सके और किस तरह यहाँ पर तुम अपना नज़्मो नसफ चला सको? अगर तुम्हारे मगलून हो जाने का मुझे खरता ना होता कि तुम मग़लूब हो जाओगे, तो मै ज़रूर तुम्हारी हौसला अफजाई के लिए, मैं भी पानी खींच कर निकालना बाहर और मै भी बताता लोगों को इस जेहत में भी जो तालीम है वो तुम्हारे सामने रखता, मगर मुझे ये खतरा है कि जब में रखूँगा तो हर कंधा है तैय्यार हो जाएगा। वो अमल किए बगैर नहीं जाऐंगे। वो सारे तैय्यार हो जाएंगे, तो फिर पानी पीना तो एक अलेहदा मामला है। उस से बढ़ कर, निकालने का मामला बन जाएगा। इस वास्ते मै रस्सा नही

रख रहा। लेकिन तुम ये समझो कि मुझे तुम्हारा अमल पसंद कितना आया है। तुम जो ड्यूटी कर रहे हो, वो ड्यूटी कितनी अच्छी है। तो सय्यदे आलम, नूरे मुजस्सम शफी ऐ मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस, अपनी ख्वाहिश का इज़हार कर के भी ये वाजेह किया कि मैं सारे रसूलों का सरदार, मैं नबियों का ईमाम और मै सारे जहांनों की रहमत और मैं खत्मे नबुव्वत के ताज वाला, लेकिन दिल मेरा भी करता है कि जहाँ मेरी उम्मत के ये कारकुन, कुंए से पानी निकाल रहे हैं, मैं भी डोल निकालूँ। ताकि पता चले मेरी उम्मत को कि मुझे कितनी हमदर्दी है उम्मत के कारकुनों के साथ और उम्मत के मुख्तलिफ उमूर चलाने वालों के साथ और साथ फिर इस चीज़ को भी वाजेह कर दिया कि ऐसे मामले पर फिर वहाँ नज्बो नसख का भी ख्याल रखना चाहिए, इंतिजामात का भी ध्यान रखना चाहिए । " तो इस लिए भी हमारे नबी अलैहिस्सलाम ने बड़ी शख्सियत के लिए, जो हकीकत में उम्मत में बड़ी हैं, जो बाइसे रश्क है, जो बाइसे तकद्दुस है, जो बाइसे तबर्रुक है कि वो लोगों के इस पहलू का भी ख्याल रखें। कहीं ऐसा न हो, जिस की बुनियाद पर औरों के लिए तकलीफ का बाइस बन जाए और औरों के लिए कोई, किसी लिहाज से प्रोब्लम बन जाए।

तो पाक मेहबूब अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने ये भी वाजेह फरमा दिया कि मेरी उम्मत मेरी दिवानी कितनी है, कि उन में ये जज़्बा बड़ा है, जैसे मैं करूँगा वैसे मेरी उम्मत भी करेगी। अगर्चे में बतौरे आदत करूँ, फिर भी वो जरूर करेंगे। एक है बतौरे इबादत करना, एक है बतौरे आदत करना। आदत भी सरकार की कितनी अज़ीम आदत है। उस में भी 'उस्वा' मौजूद है। अगर मै रस्सा रखता जाऊँगा तो मेरी उम्मत के लिए तो मेरी जिंदगी मे बेहतरीन नमूना मौजूद है। वो सारे तड़पेंगे कि हम भी ये काम करें, लेकिन इंतिज़ामी मसअला है, फिर तुम्हारे लिए यहाँ पर कंट्रोल करना मुश्किल हो जाएगा। तो ये कैसी रोशन जिंदगी है कि जहाँ खड़े हो जाएं, दिन हो रात हो, हज़र हो, सफर हो,हज हो, नमाज़ हो। जिस जेहत में जहाँ भी खड़े होते हैं, वहाँ ही कायनात के लिए सबक मौजूद है। वहाँ ही रोशनी है। हर मिनट में, हर सेकंड में, उस सेकंड से पहले भी सबक, उस सेकंड से बाद भी सबक। दुनिया ए. कायनात के अंदर कोई इंसान ऐसा नही गुज़रा कि जिस की एक- एक अदा में इतनी रोशनी हो, जितनी रोशनी रब ने हमारे नबी अलैहिस्सलाम की अदाओं मे अता फरमाई है। दुनिया में कोई इंसान ऐसा नही गुज़रा कि जिस के उस्वा-ए-ह-स-ना को यूँ मेहफूज किया गया हो, जैसे हमारे नबी अलैहिस्सलाम के उस्वा-ए-ह-स-ना को मेहफूज़ किया गया है। और मेहफूज़ 'सिर्फ किताबों में ही नहीं किया गया, मेहफूज़ अमल की पावर से किया गया है। अब कितने लोग तुम में से हैं जिन्होंने कोई किताब सीरत की नही पढ़ी और कोई किताब उस्वा-ए-ह-स-ना की नही पढ़ी, मगर चेहरे पर दाढ़ी सजाई हुई है, सर पे ईमामा है, सच बोलते हैं, अदबो एहतिराम करते है। छोटो का ख्याल करते हैं, बड़ों का अदब करते हैं। अगर्चे सीरत की किताब कोई नही पढ़ी, मगर सीने में ये सबकुछ मौजूद है। तो पता चला उम्मत ने अमल कर कर के ही नस्लों को आबाद कर दिया है। बाद वाले पहलों को देखते हैं, उनकी अदाओं से अदाएं सीखते चले जाते हैं। तो ये है सय्यदे आलम नूरे मुजस्सम शफी ऐ मोअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वो उस्वा-ए-ह-स-ना कि जो खत्मे नबुव्वत की तालीमात को खुद ब-खुद उजागर करता जा रहा है। 'वही' का दरवाजा बंद हो गया। सदियों पहले बंद हो गया। पहले कभी 'वही' के बगैर इतनी सदियों तक गुजारा नही हुआ था, जितनी सदियों में इस उम्मत ने गुज़ारा कर के दिखा दिया है। 'वही' का दरवाजा बंद है। न खुलेगा, न वही अएगी । हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम भी जब आएंगे तो बहैसियत हमारे नबी अलैहिस्सलाम के दीन के मुबल्लिग बन के आएँगे। 'वही' का दरवाज़ा बंद होने के बावजूद आज तक उम्मत जो है फंक्शनल है और उम्मत के अंदर जो दीन की रूह मौजूद है, ये किरदार है मेरे नबी अलैहिस्सलाम के उस्वा-ए-ह-स-ना का कि सरकार के साथ इश्क इतना किया है लोगों ने, देखे बग़ैर इश्क़ किया है। सूरत देख के इश्क किया था जिन लोगों ने उनका तो अंदाज़ ही बड़ा है आज भी जो पैदा होते हैं, देखे बगैर ही प्यार करते हैं। सुन्नत पर अमल करते हैं, सुन्नत अपनाने की दावत देते हैं, सुन्नत को खुद अपनाते हैं। तो ये सय्यदे आलम नूरे मुजस्सम, शफी ए मोअज्जम सल्लल्लाह

अलैहि वसल्लम का वो रोशन उस्वा-ए-ह-स-ना है कि जो हर सदी में उम्मत की जरूरतों को पूरा करता नज़र आ रहा है।

मोहतराम सामईन हज़रात ! इस सिलसिला में हमें बतौरे एक हदफ के अपनी आदात का सर्वे करना चाहिए। अपने घरों के हालात का जाएजा लेना चाहिए, तलाशी लेना चाहिए। जो औरों की बातें हो, उन सब बातों की जड़े काट के (उन जड़ी-बूटियों की) अपने घरों में इताअते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पनीरी के मजीद बीज काश्त करने चाहिए, ताकि हर उगने वाला फूल, नस्ले नोअ, यंग जनरेशन, उनके अंदर वो चलते फिरते गलियों में मदीना शरीफ की बहारों की आजानें दे रहे हों। और इससे आज बातिल परस्तों को मगरिब के हरकारों को, यहूदो-हुनूद के एजेन्टों को शिकस्त देने की ज़रूरत है, जो समझते हैं कि शायद इस दीने इस्लाम की मुद्दत खत्म हो चुकी है। सदियाँ गुजर गई है, अब इन्हें कोई नया सबक पढ़ाया जाए। हम अमले सालेह से, सीरत पे, उस्वा-ए- ह-स-ना पे अमल कर के उनको बताएं कि हमें नया सबक मंज़ूर ही नही है। हमें वही सबक काफी है जो नबी अलैहिस्सलाम ने दिया था। हमें किसी नई सीरत की जरूरत नही, हमें माजूने मदीना काफी है। वो मदीना शरीफ में जो रूहों का इलाज कर दिया गया, उस शहरे शिफा, शफा के अलावा हमें किसी किस्म की किसी पुड़िया की कोई ज़रूरत नही। इसमें हर दुख का इलाज, हर बिमारी का इलाज और हर दिन जो सूरज तुलूअ होता है, उस दिन की जरूरतों का मदावा है, समान है, वो सारे का सारा हमारे नबी अलैहिस्सलाम के उस्वा-ए-ह-स-ना में मौजूद है।आज जिन हालात में हम पिस रहे हैं (मआज़ अल्लाह) सारा उस्वा-ए-ह-स-ना से हठ जाने का नतीजा है।